

Gouse Aazam رحمۃ اللہ علیہ Ka Maqamo Martaba (Hindi)

इसका मूल्य : 375
Weekly Booklet | 375

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

गौसे आ 'जम का मक़ामो मर्तबा

(बयान)

खण्ड 15

सब के पौर

04

अल्लाह पाक का रोहनु

05

उन का कैरो अरक न काम

07

नियत की याकल

12

कैरो कैकर, लीं लने पुन, लीं लने पुन, लने ललल ललल लल ललल

मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि रज़वी رحمۃ اللہ علیہ

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मक़ामो मर्तबा⁽¹⁾

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला :
 “गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मक़ामो मर्तबा” पढ़ या सुन ले उसे बरोजे
 क़ियामत गुलामाने गौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ में उठा और उस की मां बाप
 समेत बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।
 اوبين بجاو خاتم النبیین صلی الله علیه واله وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “तुम अपनी मजलिसों को
 मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक
 पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।” (جامع صغير، ص 280، حديث: 4580)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात

मन्कूल है : इमाम जमालुल मिल्लति वहीन अबू मुहम्मद बिन अब्द
 बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से सुवाल हुवा कि हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं या
 इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं ? इश्आद फ़रमाया : मैं हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से मिला
 हूं और मैं ने उन की ख़िदमत में एक सुवाल अर्ज़ किया कि मुझे हज़रते शैख़
 अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के बारे में बताइये तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام
 ने फ़रमाया : वोह आज तमाम प्यारों में बे मिसाल और तमाम औलिया के कुत्ब

1... अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه के रबीउल आख़िर 1444 हिजरी मुताबिक 2022
 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ग्यारहवीं शरीफ़ के मदनी मुजाक़रों से क़ब्ल होने वाले
 एक बयान का तहरीरी गुलदस्ता (कुछ तरमीम के साथ) ।

हैं। अल्लाह पाक ने किसी वली को किसी मक़ाम तक न पहुंचाया जिस से आ'ला मक़ाम शैख़ अब्दुल क़ादिर को न दिया हो, न किसी वली को अपनी महबूबत का जाम पिलाया जिस से खुश गवार तर जाम शैख़ अब्दुल क़ादिर ने न पिया हो, न किसी मुक़र्रब को कोई फ़ज़ीलत अत़ा फ़रमाई मगर यह कि शैख़ अब्दुल क़ादिर उस से बढ़ कर न हों। अल्लाह पाक ने उन में अपना वोह राज़ रखा है जिस से वोह सारे औलिया से बढ़ गए, अल्लाह पाक ने जितनों को विलायत दी और जितनों को क़ियामत तक देगा सब शैख़ अब्दुल क़ादिर के हुज़ूर अदब करते हैं।

(نجم الاسرار، ص 325، 326)

है क़ौले ख़िज़र यह कि सब औलिया में नहीं तेरा कोई बदल गौसे आ'ज़म
है दिल को तेरी जुस्तजू गौसे आ'ज़म ज़बां पर तेरी गुफ़्तगू गौसे आ'ज़म

(कबालए बख़्शिश, स. 173, 170)

हुज़ूर गौसे आ'ज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के सच्चे गुलाम, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से बेहद अक़ीदतो महबूबत रखते थे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने अपने “फ़तावा रज़विय्या” में कई मक़ामात पर गौसे पाक रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का ज़िक़रे ख़ैर फ़रमाया है नीज़ हुज़ूर गौसे पाक रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की शान में कई अशआर भी लिखे हैं और आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की शाइरी ऐन कुरआनो हदीस और बुजुर्गों के अक़वाल के मुताबिक़ है, चुनान्वे आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ “हदाइके बख़्शिश” में लिखते हैं :

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

(हदाइके बख़्शिश, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

दो दरजे बढ़ गए

मज़ीद पढ़िये : कैसे बड़े बड़े औलियाए किराम मेरे मुर्शिद शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का अदब करते हैं और आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से महब्बत का इज़हार फ़रमाते हैं चुनान्वे सय्यिदी व मुर्शिदी गौसे आ'ज़म दस्त गीर के ख़लीफ़ा हज़रते शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं सरकारे बग़दाद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के साथ हज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मज़ार पर गया, हज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्खी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बहुत बड़े औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ में से हैं। हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उन को यूँ सलाम किया :
 يَا نَبِيَّ اللَّهِ يَا شَيْخَ مَعْرُوفٍ! عَبْرَتَاكَ بِدَرَجَتَيْنِ
 पर सलामती हो, हम आप से दो दरजे बढ़ गए हैं।” उन्होंने ने मज़ार शरीफ़ से जवाब दिया :
 وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا سَيِّدَ أَهْلِ زَمَانِهِ
 “और आप पर सलामती हो, ऐ अपने ज़माने वालों के सरदार !”
 (قلائد الجواهر، ص 39)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।
 اَمِينِ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जिसे ख़ल्क कहती है प्यारा खुदा का उसी का है तू लाडला गौसे आ'ज़म
 मशाइख़ जहां आएँ बहरे गदाई वोह है तेरी दौलत सरा गौसे आ'ज़म

(ज़ौके ना'त, स. 181, 182)

फ़तावा रज़विथ्या जिल्द 26, सफ़हा 559 पर है : इस में शक नहीं कि हुज़ूर गौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मर्तबा बहुत आ'ला व अफ़ज़ल है । गौस अपने दौर में सारी दुन्या के औलिया का सरदार होता है और हमारे गौसे पाक, इमाम हसन अस्करी رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के बा'द से इमाम महदी رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

की तशरीफ़ आवरी तक सारी दुन्या के ग़ौस और सब ग़ौसों के ग़ौस और सब औलियाउल्लाह के सरदार हैं और उन सब की गरदन पर इन का क़दमे पाक है। (19) زينة الخاطر الفاتر، ص 19، फ़तावा रज़विय्या, 26/559 मुलख़बसन)

खिला मेरे दिल की कली ग़ौसे आ'ज़म मिटा क़ल्ब की बे कली ग़ौसे आ'ज़म
मेरे चांद मैं सदक़े आ जा इधर भी चमक उठे दिल की गली ग़ौसे आ'ज़म
तेरा मर्तबा आ'ला क्यूं हो न मौला तू है इब्ने मौला अली ग़ौसे आ'ज़म
तू बागे अली का है वोह फूल जिस से दिमागे जहां बस गया ग़ौसे आ'ज़म
फ़िदा तुम पे हो जाए नूरीये मुज़्तर येह है इस की ख़्वाहिश दिली ग़ौसे आ'ज़म

(सामाने बख़्शाश, स. 116 ता 121)

सब के पीर

मेरे पीरो मुर्शिद शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमियों के लिये पीर हैं, “क़ौमे जिन्न” के लिये पीर हैं और मैं सब का पीर हूं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने अपनी वफ़ात शरीफ़ के वक़्त अपने शहज़ादगान से फ़रमाया : मुझ में और तुम में और तमाम मख़्लूक़ाते ज़माना में वोह फ़र्क़ है जो आस्मानो ज़मीन में है। मुझ से किसी को निस्बत न दो और मुझे किसी पर कियास न करो। (52) بحجود الاسرار، ص 51 (52)

ने'मत का चरचा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस तरह के अक्वाल जिन में ग़ौसे पाक ने अपने मुबारक लब से अपनी ता'रीफ़ की है इस को तहदीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चरचा करना) कहते हैं। जैसा कि कुरआने करीम के पारह 30 सूरतुहुहा की आयत नम्बर 11 में इर्शादे रब्बुल अ़ालमीन है :

﴿وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ﴾ तरजमए कन्जुल ईमान : और अपने रब की ने'मत का खूब चरचा करो ।

अल्लाह पाक ने मेरे मुर्शिद गौसे पाक हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को बहुत खूबियां, सलाहिय्यतें और शानो अज़मत अता फ़रमाई है तो इन्हों ने अल्लाह पाक की ने'मत का चरचा करते हुए इस तरह के इर्शादात फ़रमाए हैं और इस में लोगों को ख़बरदार भी किया है कि मेरे बारे में ज़बान मत खोलना, मुझ पर तन्कीद की या मेरी मुख़ालफ़त की तो कहीं के न रहोगे ।

बाज़े अशहब की गुलामी से येह आंखें फिरनी देख उड़ जाएगा ईमान का तोता तेरा

(हदाइके बख़्शाश, स. 29)

या'नी गौसे पाक हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के तअल्लुक़ से कोई ना मुनासिब बात की या आंखें फिराई तो ईमान निकल जाएगा जैसा कि हदीसे कुदसी है, अल्लाह पाक फ़रमाता है : जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं। (بخاری، 4/248، حدیث: 6502)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में भी हमें येह समझाया गया है कि ख़बरदार ! अल्लाह पाक के वली की तौहीन नहीं करनी है ।

अल्लाह पाक का तोहफ़ा

शैख़ अबुल हसन अली बिन सिन्जारी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : शैख़ अब्दुल कादिर दुन्या के सरदारों में से एक हैं और आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अल्लाह पाक के तहाइफ़ में से मख़्लूक़ के लिये (तोहफ़ा) हैं । (بخروج الاسرار، ص 431، 432)

बग़दाद के मुसाफ़िर को पैग़ाम

एक दिन हज़रते सय्यिद इमाम अहमद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

अपने भान्जों और मुरीदों को वसियत फ़रमा रहे थे कि एक शख्स बग़दाद शरीफ़ जाने के इरादे से उन के पास रुख़सत होने आया, आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उस से फ़रमाया : जब बग़दाद पहुंचो तो शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अगर दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा हों तो उन की ज़ियारत और वफ़ात शरीफ़ पा चुके हों तो उन के मज़ारे मुबारक की ज़ियारत से पहले कोई काम न करना । हज़रते शैख़ अबू मस्ऊद अहमद बिन अबी बक्र हरीमी और हज़रते अबू अम्र उस्मान सरीफ़ीनी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह ने औलिया में शैख़ मुह्युद्दीन अब्दुल क़ादिर रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मिस्ल न पैदा किया न कभी पैदा करेगा ।” (تجويد الاسرار، ص 56)

ब क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ीनो हरीम कि हुवा है न वली हो कोई हम्ता तेरा

मक़ामो मर्तबए गौसे पाक

हज़रते शैख़ अबू अम्र उस्मान बिन मरजूक़ क़रशी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हमारे शैख़, इमाम और सय्यिद (या'नी सरदार) हैं और उन सब के सरदार हैं जो कि इस ज़माने में अल्लाह पाक के रास्ते पर चलते हैं और अल्लाह पाक के सामने खड़े होने में सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हमारे इमाम हैं, इस ज़माने के औलिया और तमाम बड़े दरजे वालों से इस बात का सख़्ती से अहद लिया गया कि “हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की बात की तरफ़ रुजूअ करें और उन के मक़ाम का अदब करें ।” (تجويد الاسرار، ص 332, 333)

न क्यूंकर सलतनत दोनों जहां की उन को हासिल हो

सरों पर अपने लेते हैं जो तल्वा गौसे आ 'ज़म का

(क़बालए बख़िशाश, स. 96)

बहर (या'नी समुन्दर) को छोड़ कर नहर की तरफ़ नहीं जाते

शैख़ अबुल कासिम उमर बिन मस्क़द बज़्ज़ार رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मेरे सरदार शैख़ मुहयुद्दीन अब्दुल कादिर رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ शैख़ अदी बिन मुसाफ़िर رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की बहुत ता'रीफ़ किया करते थे, मुझे उन की ज़ियारत का शौक़ हुवा और मैं ने हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से उन की ज़ियारत की इजाज़त मांगी जो आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने अता फ़रमा दी। मैं सफ़र कर के उन तक पहुंचा तो उन को अपने हुजरे के दरवाजे पर खड़ा पाया। उन्होंने ने मुझे देख कर इर्शाद फ़रमाया : ऐ उमर ! खुश आमदीद, तू समुन्दर को छोड़ कर नहर की तरफ़ आया है। ऐ उमर ! शैख़ अब्दुल कादिर रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ इस ज़माने के तमाम औलिया की लगामों के वाली हैं। (تجريد الاسرار، ص 289)

مैं जहन्नम में न अब जाऊंगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ رهنुमा तुम को जो मैं ने है बनाया या गौसे
शाहे बग़दाद ! हो अत्तार पे नज़रे रहमत ख़ाली कासा लिये है दूर से आया या गौसे

(वसाइले बख़्शाश, स. 541)

उन का कैसे अदब न करूं

शैख़ मूसा बिन माहीन अज़्ज़ूली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : शैख़ अब्दुल कादिर रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हमारे ज़माने में लोगों से बेहतर हैं और हमारे वक़्त में सुल्तानुल औलिया (या'नी वलियों के सरदार) और सय्यिदुल आरिफ़ीन (अल्लाह पाक की पहचान रखने वालों के सरदार) हैं, मैं ऐसे शख़्स का अदब कैसे न करूं जिस का अदब आस्मान के फिरिश्ते भी करते हैं। (تجريد الاسرار، ص 435)

सिल्लिसलए सोहरवर्दिया के बानी हज़रते शैख़ शहाबुद्दीन अबू हफ़स उमर सोहरवर्दी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं अपने चचा और शैख़ अबू नजीब अब्दुल काहिर सोहरवर्दी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के साथ हुज़ूर गौसे पाक रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की

ख़िदमत में हाज़िर हुवा। मेरे चचा ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का बड़ा अदब किया और ख़ामोश बैठे रहे। जब वापस लौटे तो मैं ने उन से इस वक़्त हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के साथ अदब करने के बारे में पूछा तो मेरे चचा ने फ़रमाया : मैं उन का कैसे अदब न करूं हालां कि उन की जात कामिलो अक्मल है। सारी दुनिया में उन का तसरुफ़ (या'नी इख़्तियार) है।

(تجريد الاسرار، ص 438)

पहली ज़ियारत काफ़ी न थी

हज़रते ख़िज़्र मौसिली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बारगाहे गौसिय्यत रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ में हाज़िर था। मेरे दिल में ख़याल आया कि शैख़ अहमद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की ज़ियारत करूं, पीरों के पीर, रोशन ज़मीर शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : क्या शैख़ अहमद को देखना चाहते हो ? मैं ने अर्ज की : जी हां ! हुज़ूर गौसे आ'जम रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने थोड़ी देर सरे मुबारक झुकाया फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! लो येह हैं शैख़ अहमद। अब जो मैं ने देखा तो अपने आप को हज़रते शैख़ अहमद कबीर रफ़ाई रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पहलू में मौजूद पाया और मैं ने उन को देखा कि रो'बदार शख्स हैं, मैं खड़ा हुवा और उन्हें सलाम किया। इस पर हज़रते रफ़ाई रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! वोह जो शैख़ अब्दुल कादिर को देखे जो तमाम औलिया के सरदार हैं वोह मेरे देखने की तमन्ना (क्यूं करता है) ? मैं तो उन्हीं की रइय्यत (या'नी मा तहूतों) में से हूं, येह फ़रमा कर मेरी नज़र से गाइब हो गए फिर हुज़ूर गौसे आ'जम रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के इन्तिकाल शरीफ़ के बा'द बग़दादे मुअल्ला से हज़रते अहमद रफ़ाई रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की ज़ियारत को गया। उन्हें देखा तो वोही शैख़ थे जिन को मैं ने

उस दिन हुजूर गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पहलू में देखा था। हज़रते शैख़ अहमद रफ़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! क्या पहली (जियारत) तुम्हें काफ़ी न थी ?
(फ़तावा रज़विय्या, 28/388)

गर्ज आका से करूं अर्ज कि तेरी है पनाह बन्दा मजबूर है खातिर पे है कब्ज़ा तेरा
धूप महशर की वोह जांसोज़ क्रियामत है मगर मुत्मइन हूं कि मेरे सर पे है पल्ला तेरा
(हदाइके बख़्शिश, स. 30, 31)

अशआरे अक़ीदत

हज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हुजूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से अपनी अक़ीदत का इज़हार कुछ यूं फ़रमाते हैं :

सगे दरगाहे जीलानी बहाउद्दीन मुल्तानी लिक्काए दीने सुल्तानी मुहियुद्दीन जीलानी
आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हुजूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से अपनी अक़ीदत का यूं इज़हार फ़रमाते हैं :

येह चिशती नक्शबन्दी सोहरवर्दी हर इक तेरी तरफ़ माइल है या गौस
मज़रए चिशतो बुख़ारा व इराको अजमेर कौन सी किशत पे बरसा नहीं झाला तेरा
किस गुलिस्तां को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़ कौन से सिल्सिले में फ़ैज़ न आया तेरा
(हदाइके बख़्शिश, स. 259, 25, 26)

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, शेरे बेशए अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना हश्मत अली ख़ान उबैदे रज़वी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हुजूर गौसे पाक रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से अपनी महबूबत का इज़हार कुछ यूं करते हैं :

सग हूं मैं उबैदे रज़वी गौसो रज़ा का भागते हैं मेरे आगे शेरे बबर भी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

वाह ! क्या बात मेरे गौसे आ 'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की

हज़रते मिरज़ा मज़हर जाने जानां رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक बड़ा सा चबूतरा देखा जिस में बहुत से औलिया हल्का बांध कर मुराक़बे में (या'नी सब चीज़ों को छोड़ कर अल्लाह पाक के ख़याल में डूबे हुए) हैं, उन के दरमियान सिल्लिसलए नक्शबन्दिया के पेशवा हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद बहाउद्दीन नक्शबन्द رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ दो ज़ानू और हज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ तक्या लगाए तशरीफ़ फ़रमा हैं, अचानक येह बुजुर्ग खड़े हो कर चल पड़े, मैं ने (किसी से) पूछा कि येह क्या मुआमला है ? तो बताया गया कि येह सब मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के इस्तिक़बाल के लिये जा रहे हैं, फिर हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ तशरीफ़ लाए तो एक बुजुर्ग ने हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के हाथ को निहायत एहतिराम के साथ अपने मुबारक हाथों में लिया हुवा था, पूछने पर पता चला कि येह ख़ैरुत्ताबिर्द्दीन हज़रते उवैस करनी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हैं, फिर एक हुजरा शरीफ़ जो निहायत साफ़ और पुरनूर था ज़ाहिर हुवा और येह तमाम बुजुर्ग उस में दाख़िल हो गए, मैं ने इस की वजह पूछी तो जवाब मिला : “आज हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का उर्स शरीफ़ है और येह बुजुर्ग इस में शामिल होने के लिये तशरीफ़ लाए हैं ।”

(कलिमाते तथ्यिबात फ़ारसी, स. 77)

हम को “ग्यारह” का है अ़दद प्यारा उन की तारीख़े उर्स है ग्यारह

यूं अ़दद हम को प्यारा ग्यारा है वाह क्या बात गौसे आ 'जम की

(वसाइले बख़्शाश, स. 579)

कादिरिय्यों को मुबारक

सरकारे बग़दाद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के दीवानों और मुरीदों

को मुबारक हो कि सरकारे बग़दाद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के फ़रमान के मुताबिक़ “उन का मुरीद चाहे कितना ही गुनहगार हो वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक तौबा न कर ले।”

(نَجْمُ الْأَسْرَارِ، ص 191)

ईमान उस का बच गया शैतान से, जो तेरे है “सिल्सिले” में आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

(वसाइले बख़्शिश, स. 546)

ए आशिक़ाने गौसे आ 'ज़म' ! जो गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का गुलाम बन जाता है उस के तो वारे ही न्यारे हो जाते हैं चुनान्चे “बहजतुल असरार” में है : पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, कुल्चे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, किन्दीले नूरानी, शहबाजे ला मकानी अशशैख़ अबू मुहम्मद सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का फ़रमाने बिशारत निशान है : मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे साथियों और मेरे क़ियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम लिखे थे और कहा गया कि येह सारे अपराद तुम्हारे हवाले कर दिये गए हैं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने जहन्नम पर मुक़रर फ़िरिश्ते से पूछा : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्होंने ने जवाब दिया : नहीं।

(نَجْمُ الْأَسْرَارِ، ص 193)

कह कर के “ला तख़फ़” हमें बे ख़ौफ़ कर दिया उस रहमते खुदा को हमारा सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 620)

हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मज़ीद फ़रमाया : मुझे अपने परवर्दगार की इज़ज़तो जलाल की क़सम ! मेरा हिमायत का हाथ मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आस्मान ज़मीन पर साया किये हुए है। अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा ! اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ! मैं तो अच्छा हूं। मुझे अपने पालने वाले

की इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब्बे करीम की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं।

(نجم الاسرار، ص 193)

क़ादिरि कर क़ादिरि रख क़ादिरियों में उठा क़द्रे अब्दुल क़ादिर कुदरत नुमा के वासिते

(हदाइके बख़्शिश, स. 149)

निस्बत की बरकत

हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : खुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने मुझे देखा या मेरे देखने वाले को देखा या मेरे देखने वाले के देखने वाले को देखा। मैं उस शख़्स पर हसरत करता हूं जिस ने मुझे नहीं देखा।

(نجم الاسرار، ص 53)

सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। जो शख़्स मेरी तरफ़ मन्सूब हो और मेरा नाम ले, **अल्लाह** पाक उस को क़बूल करेगा और उस पर मेहरबानी फ़रमाएगा, अगर्चे वोह बुरे अमल पर हो, वोह मेरे मुरीदों में से है। मैं ने मुन्कर नकीर से इस बात का अहद लिया है कि वोह क़ब्र में मेरे मुरीदों को नहीं डराएंगे।

(نجم الاسرار، ص 193 طبعاً)

کھ کر تھللی دی گولاموں کو کھیامت تکرھے بے خوائف بندا گوسے آ 'ज़म का निदा देगा मुनादी हज़र में यूँ क़ादिरियों को किधर हैं क़ादिरि कर लें नज़ारा गौसे आ 'ज़म का फ़िरिशतो रोकते क्यूँ हो मुझे जन्नत में जाने से येह देखो हाथ में दामन है किस का गौसे आ 'ज़म का सदाए सूर सुन कर क़ब्र से उठते ही पूछूंगा कि बतलाओ किधर है आस्ताना गौसे आ 'ज़म का

अज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाजे को तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला गौसे आ'जम का जमीले क़ादरी सो जां से हो कुरबान मुर्शिद पर बनाया जिस ने मुझ जैसे को बन्दा गौसे आ'जम का

(क़बालए बख़्शिश, स. 93 ता 101)

हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जन्नत की ने'मतों का कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता कि अल्लाह पाक ने अपने बन्दों की आंखों की ठन्डक के लिये क्या कुछ तय्यार कर रखा है । (गौसे पाक के हालात, स. 77)

सय्यिदी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ लिखते हैं :

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का खुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(हदाइके बख़्शिश, स. 37)

ऐ आशिक़ाने गौसे आ'जम ! ग्यारहवीं वाले मुर्शिद की सीरत भी अपनाने की कोशिश फ़रमाइये, आइये ! फ़रमाने गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ सुनिये : अल्लाह पाक हमें इन के मुताबिक़ अपने शबो रोज़ (या'नी दिन रात) गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए ।

फ़रमाने गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ : “अल्लाह पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये और सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये ।”

(فتوح الغيب مع قلائد الجواهر، ص 44 طحطا)

गौसे पाक के दीवानो ! निय्यत कर लीजिये कि आज के बा'द कोई गुनाह नहीं करेंगे, اِنْ شَاءَ اللَّهُ नमाज़ें क़ज़ा नहीं करेंगे, اِنْ شَاءَ اللَّهُ बिला इजाज़ते शर्ई जमाअत भी नहीं छोड़ेंगे, اِنْ شَاءَ اللَّهُ फ़र्ज़ रोज़े नहीं छोड़ेंगे, ज़कात पूरी अदा करेंगे, हज़ फ़र्ज़ हो गया तो अदाएगी में देर नहीं करेंगे, झूट नहीं बोलेंगे, दाढ़ी नहीं मुंडाएंगे और एक मुठ्ठी से नहीं घटाएंगे, फ़िल्में ड्रामे,

गाने बाजे नहीं देखें, सुनेंगे, बे पर्दा औरतों को नहीं देखेंगे, सूद नहीं खाएंगे, रिश्वत का लेनदेन नहीं करेंगे, शराब के करीब भी नहीं जाएंगे, मां बाप की ना फ़रमानी नहीं करेंगे क्यूं कि येह सब बातें **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी हैं जैसा कि अभी आप ने ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का फ़रमान सुना कि **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये ।

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! जब **अल्लाह** पाक की रहमत से गुनाहों से बचेंगे, ख़ूब नेकियां करेंगे, नेक आ'माल का रिसाला पुर करेंगे, मदनी काफ़िलों में सफ़र करेंगे, आशिक़ाने रसूल की सोहबत इख़्तियार करेंगे, **अल्लाह** व रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा हासिल हो गई तो ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पीछे पीछे जन्नत में जाएंगे । اِنْ شَاءَ اللَّهُ

सजाएं इमामा बढ़ाएं जो दाढ़ी उन्हें हज़र में बख़्खावा ग़ौसे आ'ज़म जो हैं वक़फ़, सुन्नत की ख़िदमत की खातिर उन्हें हज़र में बख़्खावा ग़ौसे आ'ज़म जो रोज़ाना देते हैं नेकी की दा'वत उन्हें हज़र में बख़्खावा ग़ौसे आ'ज़म सफ़र काफ़िले में जो करते हैं हर माह उन्हें हज़र में बख़्खावा ग़ौसे आ'ज़म जो दें राहे मौला में बारह महीने उन्हें हज़र में बख़्खावा ग़ौसे आ'ज़म है अत्तार को सल्वे ईमां का धड़का बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़िश, स. 550, 551)

ख़्वाब में जि़यारते ग़ौसे पाक का ग़ौसिय्या नुस्खा

“मदनी पन्जसूरह” सफ़हा 303 पर है : क़सीदए ग़ौसिय्या (फ़्रेम करवा कर) जो कोई अपने सामने रखे (ताकि नज़र पड़ती रहे) और तीन

मरतबा पढ़े, मक्बूले बारगाहे गौसिय्यत मआब होगा और हुजूर सय्यिदुना
गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की ज़ियारत से मुशररफ़ होगा, اِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ ।

बेदार बख़्त वोह है हक़ीकत में जिस को जल्वा तू ख़्वाब में दिखा गया बग़दाद वाले मुशरिद

(वसाइले बख़्शिश, स. 546)

मेरा पीर मेरा पीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर आप हैं पीरों के पीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर

महबूबे रब्बे क़दीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर आप वलियों के अमीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर

बे मिसालो बे नज़ीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर बख़्शवा दो मेरे पीर गौसे आ'ज़म दस्त गीर

(वसाइले फ़िरदौस, स. 60, 61)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्रीबात, इज्तिमाअत, आ'रास और जुलूसे मीलाद
वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर
मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते
सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का
मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर
घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी
फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब
सवाब कमाइये ।

अगले हफ्ते का रिसाला

